P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-3* June- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

महिला शिक्षा : स्थिति, आवश्यकता समस्याएँ एवं समाधान

दिनेश प्रताप सिंह
प्रवक्ता,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
आई0 एम0 आर0,
गाजियाबाद

सारांश

प्रत्येक समाज के कुछ मुख्य पहलू होते है वैसे ही भारतीय समाज के दो मुख्य पहलू है, स्त्री व पुरूष। भारतीय समाज में स्त्री का स्थान अति महत्वपूर्ण हमेशा से ही रहा है स्त्रियों ने सदैव अपना योगदान समाज के पुर्नगठन व रचनात्मकता के लिए दिया है उनकी सही शक्ति का प्रयोग करके समाज को अति संस्कारित व विकसित बनाया जा सकता है। भारत में स्त्री शिक्षा के स्वरूप में निरन्तर परिवर्तन होता रहा है। यदि स्त्रियों की प्रवल शक्ति व महान योग्यता का समुचित प्रयोग किया जाये तो राष्ट्र को समुचित व पूर्ण रूप से विकसित किया जा सकता है उनकी शिक्षा के बिना वे राष्ट्रीय जीवन मे पूर्ण व समुचित भूमिका का निर्वाह नही कर पायेगी।

मुख्य शब्द : पुर्नगठन, रचनात्मकता, संवेदनशील, शास्तार्थ, शैशवावस्था।

प्रस्तावना

किसी भी समाज का उन्नयन करने के लिए शिक्षा सबसे बडा माध्यम है उसी प्रकार भारत को भी प्रगति पर ले जाने के लिए सबका शिक्षित होना आवश्यक है। भारतीय समाज में स्त्री का स्थान अति महत्वपूर्ण हमेशा से ही रहा है स्त्रियों ने सदैव अपना योगदान समाज के पुर्नगठन व रचनात्मकता के लिए दिया है उनकी सही शक्ति का प्रयोग करके समाज को अति संस्कारित व विकसित बनाया जा सकता है। मनुस्मृति में कहा गया है कि जहॉ नारी की पूजा होती है वहॉ देवता निवास करते है। मनुस्मृति में ही एक अन्य स्थान पर लिखा गया है कि राजा का कर्त्तव्य है कि सब लडकियों और लडकों के लिए नियत समय तक व्रहम्चर्य आश्रम में रहने की व्यवस्था करे।

वैदिक काल में स्त्री शिक्षा

वैदिक काल में स्त्रियों को वर्णानुसार कर्म की शिक्षा दी जाती थी अथर्ववेद में इसके प्रमाण प्राप्त हुए है। शतपथ ब्राहमण के अन्तिम भाग में एक स्थान पर आया है कि प्राचीन ऋषि जहॉ लडकों को विद्वान बनाने के यत्न करते थे वहॉ लडकियों को भी विदुषी बनाते थे। शुद्र वर्ण की स्त्रियों को तो इस काल में शिक्षा के अधिकार से ही वचिंत कर दिया गया था। मनुस्मृति में कहा गया है कि जहॉ नारी की पूजा होती है वहॉ देवता निवास करते है। मनुस्मृति में ही एक अन्य स्थान पर लिखा गया है कि राजा का कर्त्तव्य है कि सब लडकियों और लडकों के लिए नियत समय तक व्रहम्चर्य आश्रम में रहने की व्यवस्था करे।

बौद्व काल में स्त्री शिक्षा

स्त्रियों की शिक्षा के बारे में गौतम बुद्व के विचार वैदिक काल से अलग थे। बौद्व काल में बौद्व मठों एवं विहारो में सभी स्त्री व पुरूषों को बिना किसी भेदभाव के योग्यता के आधार पर प्रवेश की अनुमति प्रदान की गई, इस काल में स्त्रियॉ पुरूषों की भॉति किसी भी प्रकार की शिक्षा प्राप्त कर सकती थी जनऋुति है कि कवि कालिदास की पत्नी विद्योतमा विदुषी महिला थी उसने अनेक पण्डितों को शास्तार्थ में हराया। बाणभट्ट ने कादम्बरी की नायिका महाश्वेता को यज्ञोपवीट धारण करने पवित्र शरीर वाली बताया है। बौद्व काल में भाषा साहित्य, धर्म व दर्शन की शिक्षा स्त्रियॉ प्राप्त करती थी। अतः हम कह सकते है कि बौद्व काल में स्त्रियों की शिक्षा में कुछ प्रगति देखने को मिली।

मुस्लिम काल में स्त्री शिक्षा

मुस्लिम काल का आगमन होने पर उसकी सभ्यता व सस्कृति भी यहॉ आयी वे स्त्रियों को केवल पढने लिखने तक की शिक्षा देने के पक्षधर थें। जिसके परिणामस्वरूप इस युग में स्त्री शिक्षा का स्वरूप अति संकुचित हो गया मालवा के शासक गयासुददीन ने सारंगपुर में एक मदरसा केवल लडकियो की शिक्षा के लिए अवश्य स्थापित किया गया था परन्तु पहली बात तो यह है कि उस समय पर्दा प्रथा होने के कारण लोग अपनी बच्चियों को घर के बाहर नही

भेजना चाहते थे मुस्लिम काल मे रजियाबेगम, गुलबदन वेगम, नूरजहॉ, मुमताज, जहॉआरा आदि अरबी व फारसी की विद्वान के रूप में प्रसिद्व हुई।

ब्रिटिश काल में स्त्री शिक्षा

स्त्री शिक्षा की दिशा में पहला प्रयास ईसाई मिशनरियो ने प्रारम्भ किया भारत में बालिकाओं के लिए अलग से, सबसे पहला स्कूल 1818 में ईसाई मिशनरी रेक्रेण्डमे ने चिनसुरा में स्थिापित किया। 1819 में कैरे ने सीरामपुर में दूसरा विद्यालय स्थापित किया 1820 में डेविड हेयर ने भी कलकत्ता में एक बालिका विद्यालय की स्थापना की। 1821 में इग्लैण्ड से मिस कूक भारत आई इन्होने आते ही 8 बालिका विद्यालय की स्थापना की। मिशनरियो से प्रभावित होकर भारतीय भी आगे बढे। पूना मे महात्मा फूले ने एक बालिका विद्यालय खोला जिसमें वे और उनकी पत्नी पढाते थें। इसके बाद राजा राममोहन राय व ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने भी कलकत्ता क्षेत्र में कई बालिका विद्यालयों की स्थापना की।

वुड का घोषणा पत्र (1854)

19 जुलाई 1854 के इस घोषणा पत्र को कुछ इतिहासकारों ने भारतीय शिक्षा का मेग्नाकार्टा भी कहा है। परिणामस्वरूप अनेक स्थानो पर बालिका विद्यालयों की स्थापना की गयी साथ ही महिला शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओ की भी स्थापना की गयी इससे स्त्री शिक्षा के प्रसार में तेजी आई।

हण्टर आयोग (1882)

3 फरवरी 1882 को लार्ड रिपन ने अपनी कार्यकारिणी समिति के सदस्य विलियम हण्टर की अध्यक्षता में पहले भारतीय शिक्षा आयोग की स्थापना की, आयोग ने अपने शब्दो में लिखा "मानव संसाधनो के सम्पूर्ण विकास के लिए, परिवार के सुधार के लिए तथा शैशवावस्था के अत्यन्त संवेदनशील वर्षो के दौरान बच्चो को गढने के लिए स्त्रियों की शिक्षा तो पुरूषो की शिक्षा से भी अधिक महत्वपूर्ण है।"

सैडलर आयोग ने स्त्री शिक्षा के प्रसार के लिए कुछ सुझाव भी दिये –

1. छात्राओं का शुल्क कम किया जाये व छात्रवृतियॉ भी दी जाये।
2. बालिका विद्यालयों के लिए अनुदान की शर्ते आसान की जाये।
3. इन विद्यालयों का निरीक्षण महिला निरीक्षको द्वारा हो।
4. विधवा महिलाओ को शिक्षिका बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाये।

सैडलर कमीशन के सुझावो से ही 1916 में दिल्ली में लेडी हार्डिंग मेडिकल कालेज की स्थापना की गयी यह भारत का सर्वप्रथम महिला मेडिकल कालेज था। इसी वर्ष महर्षि कर्वे ने पूना में महिला विश्वविद्यालय की स्थापना की।

सैडलर कमीशन (1917)

सैलडन कमीशन ने सिफारिश की एक ऐसी परिषद बनाई जाये जो महिलाओ के लिए पृथक उपयोगी पाठयक्रम तैयार करे। उस समय अनेक ऐसी संस्थाए भी थी जो देशी ढंग की शिक्षा दे रही थी किसी विद्यालय अन्य स्थानो पर इनके परीक्षा केन्द्र होते थे। परीक्षा उत्तीर्ण करने वालो को ये संस्थाए उपाधि प्रदान करती थी। इनमें प्रमुख संस्थाए– हिन्दी साहित्य सम्मेलन, कन्या गुरूकुल, प्रयाग महिला विद्यापीठ आदि थी जों लोगो को सुशिक्षित सुसंस्करित व अच्छी नागरिक बनाने मे सहयोग दे रही थी। सन् 1922 से 1947 के मध्य स्त्री शिक्षा का काफी विकास हुआ है इस दौरान स्वाधीनता संग्राम की बागडोर मुख्य रूप से महात्मा गांधी के हाथ में रही। महात्मा गांधी की सम्भवतः सबसे बडी उपलब्धि यही थी।

विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948–49)

डा0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन की अध्यक्षता में गठित आयोग ने स्त्री शिक्षा के महत्व और आवश्यकता पर पर्याप्त बल दिया जो आयोग ने सुझाव दिया वो निम्नलिखित है–

1. स्त्रियों को उनकी आवश्यकतानुरूप शिक्षा दी जाए।
2. शैक्षिक अवसरो की समानता प्रदान की जाए।
3. स्त्रियो को गृहअर्थशास्त्र गृह प्रबन्धन आदि की शिक्षा दी जाए।
4. जो विद्यालय सह–शिक्षा के रूप में संचालित है उनको वास्तव में सह शिक्षा के रूप में संचालित किया जाए सत्यता यह है कि उनमें सभी सुख सुविधायें पुरूषो के लिए है बालिकाओं के खेलकूद, आमोद प्रमोद व आवश्यक सुविधाएँ भी उपलब्ध नही है बहुत से विद्यालय ऐसे है जहॉ कोई भी स्त्री शिक्षिका है हि नहीं अतः यह आवश्यक हो गया है कि सही अर्थो में सह शिक्षा विद्यालय विकसित किये जाये।

राष्ट्रीय महिला समिति (1958)

राधाकृष्णन कमीशन का कार्यक्षेत्र विश्वविद्यालय तक ही सीमित रहा और उस पर अमल भी बहुत कम हो पाया अतः भारत सरकार ने द्वितीय पंचवर्षीय योजना के दौरान वर्ष 1958 में श्रीमति दुर्गाबाई देशमुख की अध्यक्षता में राष्ट्रीय महिला शिक्षा समिति का गठन किया। इस समिति को देशमुख समिति भी कहा जाता है इस समिति ने निम्नलिखित सुझाव 1959 में प्रस्तुत किया जो निम्नलिखित है–

1. केन्द्रीय स्तर पर राष्ट्रीय महिला शिक्षा परिषद का गठन किया जाय जो स्त्री शिक्षा के प्रसार के लिए उत्तरदायी हो।
2. प्राथमिक व माध्यमिक स्तर पर बालिकाओ को अधिक सुविधायें प्रदान की जाये।
3. कुछ समय के लिए लडकियो की शिक्षा कों विशिष्ट समस्या के रूप में स्वीकार किया जाये।
4. ग्रामीण क्षेत्रों में स्त्री शिक्षा के प्रसार के लिए प्रयास किये जाये।

कोठारी कमीशन

कोठारी कमीशन ने सामान्यतः देशमुख समिति हंसा मेहता तथा भक्तवत्सलम समिति की सन्तुतियों का समर्थन करते हुए निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किये–

1. 6–14 वर्ष की सभी लडके लडकियों के लिए अनिवार्य व निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था की जाये।
2. महिला शिक्षा के लिए आर्थिक सहायता उदारता के साथ की जाये।

3. लडकियों के लिए अलग से महाविद्यालय स्थापित किया जाये।
4. स्त्रियों के लिए अशंकालीन रोजगारो की विशेष व्यवस्था हो ताकि वे पारिवारिक दायित्वो को सम्भालते हुए अपनी शिक्षा का आर्थिक लाभ उठा सके।

साहित्यावलोकन

भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्यॉए में रमन बिहारी लाल जी की पुस्तको का अध्ययन करने के उपरांत अन्य बहुत सी समस्याये पारिलक्षित होती है, दैनिक समाचार व पत्र पत्रिकाओं में भी बहुत सी वास्वविकता व समस्याये दिखती है। किन्तु लेखक की अपनी सीमा होती है। किन्तु अन्य बहुत सी पुस्तको का भी सार यही है कि इस समस्या का समाधान मिल जुल कर सोचा जाये।

स्त्री शिक्षा की समस्याएँ

स्त्रियों की शिक्षा की प्रगति व विकास न हो पाने की अनेक समस्याएँ है–

1. सहशिक्षा के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण – सहशिक्षा का आशय बालक–बालिकाओं का एक ही स्कूल में समान पाठयक्रम से होता है। प्राथमिक पर दोनो साथ–2 पढते है कि माध्यमिक वे उच्च स्तर पर दोनो साथ–2 पढाने के सम्बन्ध में लोग एकमत नही है। अधिकतर भारतवासी इसके विरोध में है। जिसका मुख्य कारण लडके–लडकियों में यौन सम्बन्धों और प्रेम विवाह का भय है। कुछ लोगो का तर्क है कि पुरूप युवतियो को एक संस्था में एक साथ पढाने से उन को ज्यादा समय सजने संवारने आदि में गुजर जाता है इस समस्या का हल हमें रूठियो को समाप्त करके ही किया जा सकता है इसका एक प्रमुख उपाय महिला अध्यापिकाओ को अत्यधिक संख्या में नियुक्त करके किया जा सकता है।
2. शिक्षिकाओं की मानसिकता की समस्या– हमारे देश में प्रशिक्षित शिक्षिकाओं की कमी रही है। लाखों प्रशिक्षित शिक्षिकाए बेरोजगार है परन्तु ये अपने निवास स्थानो से दूर, विशेषकर ग्रामीण पहाडी, रेगिस्तानी और दूर दराज के क्षेत्रों में जाना पसन्द नही करती यदि प्रथम नियुक्त स्वीकार कर भी लेती है तो कुछ ही दिनों में भाग दौड करके सिफारिश अथवा पैसे के बल से अपना स्थानान्तरण करा लेती है परिणाम स्वरूप ग्रामीण विद्यालयो में महिला शिक्षिकाये है ही नही।

जिससे समाधान के लिए दूरदराज, पहाडी, ग्रामीण आदि क्षेत्रो में महिला सुरक्षा का उचित प्रबन्ध किया जाना चाहिए। यदि पति पत्नि अलग–अलग स्थानो पर है तो एक स्थान पर तैनाती दी जानी चाहिए।

स्त्री शिक्षा की समस्याएँ

शिक्षा जगत की एक प्रमुख समस्या अपव्यय व अवरोधन की समस्या है– जिसके प्रमुख कारण विद्यालयो की अनुपब्धता विद्यालयो की दुर्दशा, निर्धनता व कुछ सामाजिक कारण है– इसका समाधान विद्यालयों की दशा सुधारकर शिक्षको की जवाबदेही तय करके विकलागों के लिए विशिष्ट विद्यालयों की स्थापना की जाए उनकी सुविधाये बढाई जाय कस्तूरबा विद्यालयों की दशा में सुधार किया जाय।

निष्कर्ष

इन सभी निष्कर्षो व तथ्यो के आधार पर यदि बात नारी शिक्षा की जाय तो यह बात पूर्ण सत्य है कि हम विश्व या समाज का विकास तब तक नही कर सकते है जब तक हम विश्व की आधी जनसंख्याओ को पूर्णतः शिक्षित नही कर देते है। अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष 1975 के समाज में महिलाओं की वास्तविक भूमिका के परीक्षण के लिए अनेक विकासशील देशो मे एक उत्प्रेरक का कार्य किया जब महिलाओ की शिक्षा व प्रशिक्षण में धन लगाया जायेगा तो ऊचॉ प्रतिफल प्राप्त होगा। महिला शिक्षा की दशा को सुधार करके उनके खिलाफ अत्याचार शोषण उत्पीडन निर्धनता व अन्य बहुत प्रकार की समस्याओ से उनको बचाया जा सकता है व महिलाओ की समानता के साथ –2 आत्मनिर्भरता भी प्रदान की जा सकती है। तथा सम्पूर्ण समाज की दिशा व दशा के एक उत्कृष्ट मार्ग का चयन किया जा सकता है जहॉ समृद्वि, खुशहाली, भाईचारा, प्रेम मातृत्व आदि का अहम स्थान होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *लाल, रमन बिहारी, – भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याए*
2. *नारी शिक्षा हरीचन्द; नई शिक्षा पद्वति वर्ष 8, अंक 5 ISSN No.- 2393-8153, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा उ0प्र0*
3. *पाठक पी0डी0,– भारतीय शिक्षा का इतिहास, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा उ0प्र0*
4. *दैनिक जागरण, समाचार पत्र हिन्दी, मेरठ संस्करण 09.03.2018*

Add Some more References in your paper